प्रसाद की सौन्दर्य–चेतना

गीता यादव*

हिन्दी साहित्य को आलोकित करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद एक सजग कवि, नाटककार, कहानीकार उपन्यासकार, निबन्ध–लेखक तथा समीक्षक सभी रूपों में जाने जाते है। अपनी रचनाओं में प्रसाद जी ने अपने युग की सांस्कृतिक चेतना का रसात्मक संस्करण प्रस्तुत किया है। आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में स्वच्छन्द चेतना का प्रवर्तन, अन्तर्मुखी अनुभूतिमयी भावधारा का मोह इसी प्रतिभा सम्पन्न कवि के द्वारा सम्भव हो सका। इस सन्दर्भ में डॉ. विजयेन्द्र स्नातक का कहना है–''निश्चय ही प्रसाद साहित्य संस्कृति एवं तत्व चिंता के क्षेत्र में एक मेधावी मनीषी, आलोचना के क्षेत्र में एक आलोकवाही साहित्य चिंतक और सर्जन के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी प्रबुद्ध और रस वेत्ता–सृष्टा तथा विविध साहित्य शैलियों के आविष्कर्ता है।''1

जयशंकर प्रसाद की काव्य–चेतना निरन्तर उर्ध्वगामिनी रही है। वह तो सतत् स्वच्छन्द मार्ग पर प्रवाहित होती रही। उसमें इनके मानसिक विकास क्रम का प्रतिबिम्ब झलकता है। प्रारम्भ से ही प्रसाद ने किसी भी प्रकार की साहित्यिक सीमा के भीतर बद्ध होना उचित नहीं समझा। इन्होंने सर्वप्रथम द्विवेदी युगीन अनैसर्गिक काव्य व्यापार के विरुद्ध विद्रोह का स्वर उठाया काव्य को नियमों के जटिल बन्धनों से मुक्त कर, मानव जीवन के मार्मिक प्रसंगों को स्पर्श करने योग्य बनाया। इन्होंने कविता की रूद्ध गति को पूर्णतः उन्मुक्त करने का प्रयास अपनी प्रारम्भिक कृतियों में किया। इस सन्दर्भ में आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी का कहना है–''वास्तव में सौन्दर्यसत्ता किसी काव्य सांचे की बंदिनी नहीं''2

प्रसाद जी का साहित्यिक जीवन 'इंदु' से प्रारम्भ होता है। 'इन्दु' के विकास के साथ ही कवि की काव्य चेतना भी स्पष्ट और पुष्ट होती हुई दिखायी पड़ती है। प्रसाद की काव्य प्रतिभा के विकास में इंदु का उतना ही हाथ है जितना किसी शिशु के विकास में मां के दूध का होता है।

छायावादी काव्य की दृष्टि से 'झरना' प्रसाद जी की रचनाओं का प्रथम संग्रह है। यही से प्रसाद की काव्य प्रतिभा में निखार आता है। प्रसाद जी की रचना आँसू हिन्दी साहित्य का एक श्रेष्ठ काव्य है। इस सन्दर्भ में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने लिखा है– आँसू प्रसाद का विरह काव्य है। यह बड़ी ही मनोरम कविता है। हिन्दी में इसकी गणना थोड़ी–सी उत्कृष्ट रचनाओं में की जा सकती है।''3

शोध–छात्र हिन्दी विभाग डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आँसू में जो सौन्दर्य परिलक्षित होता है उस सन्दर्भ में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं– ''आँसू काव्य में केवल स्थूल प्रेम या सौन्दर्य नहीं है, वे प्रेम और सौन्दर्य–रूप आत्मा के अंग बन गये हैं।''4 आँसू में प्रसाद जी ने नायिका के सौन्दर्य का मनोरम चित्र अंकित किया है–

''बांधा था विधु को किसने इन काली जंजीरो से।
मणिवाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ होरो से।।''5

प्रसाद जी सौन्दर्य को एक उदात एवं पवित्र भावना मानते है, जिसमें वासना का लेश भी नहीं है। आँसू में नायिका के पावन तन की शोभा निरूपित करते हुए वे कहते हैं–

''चंचला स्नान कर आवे, चन्द्रिका पर्व में जैसी
उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी।''6

कवि ने यहाँ प्रिय के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सौन्दर्य का चित्रण किया है। आँसू के उपरान्त प्रसाद की दूसरी रचना लहर में इनकी प्रेम भावना, सौन्दर्य भावना का पर्याप्त विकास हुआ है। लहर में मानवीय और प्राकृतिक दोनों प्रकार के सौन्दर्य के दर्शन किये जा सकते हैं–

''वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे
जब सावन घन सघन बरसते
इन नयनों की छाया–भर थे।''7

प्रकृति का मानवीकरण करते हुए ऊषा काल का अत्यन्त मनोरम चित्रण किया है–

''बीती विभावरी जाग री।
अम्बर–पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी।8

प्रसाद की सौन्दर्य चेतना का चरमोत्कर्ष कामायनी में देखने को मिलता है। कामायनी के सर्जना के मूल में प्रसाद का सम्पूर्ण कर्तृत्व सूत्र रूप में तन्तुवाचित हुआ है। ऐसा लगता है कि मानो उनकी ये सारी कृतियाँ कामायनी की भाव–भूमि विनिर्मित करने वाली है। इन सब कृतियों की चरम परिणति एवं छायावाद युग की श्रेष्ठतम उपलब्धि कामायनी में दृष्टव्य है। रामधारी सिंह दिनकर इसे प्राचीन आख्यान पर आधारित एक ऐतिहासिक काव्य मानते हैं और ''प्रसाद जी ने इस ऐतिहासिक कथावस्तु को साभिप्राय ग्रहण किया है, उसके द्वारा उन्होंने वर्तमान मानवता और समाज के सम्मुख आदर्श उपस्थित कर तत्कालीन अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है।''9

वस्तुतः कामायनी में मनु अथवा मनस् तत्व की अभिव्यक्ति करना कवि का ध्येय रहा है। इस सन्दर्भ में स्वयं प्रसाद जी ने कामायनी की भूमिका में स्वीकार किया है– ''यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है। इसलिए मनु और श्रद्धा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की अभिव्यक्ति करे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। मनु अर्थात्

मन के दोनों पक्ष, हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से है।10

यह प्रसाद की ही नहीं समूचे छायावाद बल्कि आधुनिक हिन्दी काव्य की एक प्रौढ़तम कृति है। इसकी तरह का भाव सौन्दर्य और कल्पना उड़ान प्रसाद की अन्य कृतियों में नहीं है। मानव जीवन के प्रलय उसके बाद पुनः आरम्भ की विवेचना करने वाले इस काव्य में कही भी नीरसता या शुष्कता नहीं है। इसमें सौन्दर्य के दर्शनीय स्वप्नों की भरमार तथा जीवन के गवेषणात्मक तथ्यों का गम्भीर्य और बौद्धिक विचार धाराओं का अद्‌भुत समन्वय मिलता है। श्रद्धा का अकथनीय सौन्दर्य मनु को विचलित कर देता है–

और देखा वह सुन्दर दृश्य नयन का इन्द्रजाल अभिराम,
कुसुम वैभव में लता समान चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम।11

इसी क्रम में आगे लिखते हैं–

''नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।''12

प्रसाद ने श्रद्धा के सौन्दर्य का मांसल एवं स्थूल चित्रण न करके सूक्ष्म एवं वायवी चित्रण किया है श्रद्धा को अपने समीप खड़ा देखकर मनु को ऐसा लगा मानो फूलों भरे उपवन से वायु द्वारा बहाकर लायी हुई सुगन्ध ने साकार रूप धारण कर लिया हो–

''कुसुम कानन अंचल में मन्द, पवन प्रेरित सौरभ साकार।
रचित परमाणु पराग शरीर, खड़ा हो ले मधु का आकार।''13

प्रसाद जी सौन्दर्य को परमात्मा द्वार दिया गया सात्विक वरदान मानते हैं–

''उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं।
जिसमें अनन्त अभिलाषा के, सपने सब जगते रहते हैं।''14

आदि से अन्त तक काव्य की प्रत्येक पंक्ति सूक्ष्म सौन्दर्य से आविल तो है ही दार्शनिक चेतनाओं से भी समन्वित है। कामायनी की कथा योजना का आधार भारतीय ग्रन्थों में बिखरी हुई सामग्री है। 'आमुख' में शतपथ ब्राह्मण, ऋग्वेद छान्दोग्य उपनिषद आदि का उल्लेख स्वयं कवि ने किया है। पात्रों की ऐतिहासिकता को जीवित रखने के साथ ही उन्हें उनमें नवीन योजना तथा प्राण–प्रतिष्ठा भी करनी थी। सजीवता की रक्षा के लिए प्रसाद ने उनमें भावों को संग्रहित कर दिया। उनकी व्यक्तिगत चारित्रिक विशेषताएं उन्हें प्रतिनिधित्व प्रदान करती है। कामायनी एक सुन्दर रूपक के रूप में भी प्रस्तुत हो सकती है। मनु मन का प्रतीक है। श्रद्धा उसका हृदय तथा इड़ा बुद्धि पक्ष है। श्रद्धा का वास्तविक मूल्य न जानने वाला मन इधर–उधर भटकता है। अन्त में इसी के द्वारा उसे आनन्द प्राप्ति होती है। कामायनी की कथा योजना इस प्रकार की है कि उसको अनेक रूपों में प्रस्तुत किया जा सकता है। वह आदि मानवता का विकास है। एक मनोवैज्ञानिक रूपक की दृष्टि से उसमें मनोविकारों की क्रमिक व्यवस्था भी प्राप्त हो सकती है। मानवता के इतिहास में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। कामायनी कवि की अन्तिम और अन्यतम साधना का परिणाम है। इसमें दीर्घता की अपेक्षा गम्भीर्य अधिक है। रघुवंश यदि

एक विस्तृत राजपथ है तो कामायनी एक मनोरम वीथी। राजपथ के सौन्दर्य का परिचय दूर तक चले जाने से प्राप्त होता है किन्तु वीथी की सुकुमार शोभा ठहर–ठहर कर देखनी पड़ती है। तब जी भरता है।

कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी सभी क्षेत्रों में अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा से कार्य करने वाले इस महान कलाकार ने अपने समय की सांस्कृतिक चेतना का रसात्मक संस्करण साहित्य में प्रस्तुत किया। भारतीय दर्शन का विशद् अध्ययन करने वाले इस कलाकार ने कामायनी में उनका काव्यात्मक संकलन प्रस्तुत किया। उपनिषदों का अद्वैतवाद, शैव दर्शन की प्रत्यभिज्ञा, बौद्धों की करुणा एक साथ उनके काव्य में प्रस्फुटित हो उठी। आँसू के विरह–वर्णन में एक ओर यदि स्वच्छन्तावादी कवियों की सी आत्मकथा है तो दूसरी ओर सूफियों के तन्मय प्रेम की सी अभिव्यंजना। 'झरना' के गीतों में यदि मानव प्रकृति की भावनाओं का सम्मिलन है तो 'लहर' में अपूर्व तन्मयता। काव्य के सीमित क्षेत्र में भावना और शब्द के बन्धनों में एक साथ इतनी भावनाओं का समाहार कवि की महानता का परिचायक है। भाषा के क्षेत्र में प्रसाद जी ने उसे लालित्य प्रदान किया। खड़ी बोली का सर्वोत्तम रूप उनमें मिलता है। कवि प्रसाद ने परम्परा का अनुकरण न करते हुए भी उसमें योग दिया। उन्होंने स्वयं प्राचीन का एक नवीन संस्करण प्रस्तुत किया। कामायनी विश्व के काव्यों में एक आगामी चरण है। आँसू विरह काव्यों में मेघदूत के समीप रखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. महाकवि प्रसाद, डॉ. विजयेन्द्र स्नातक एवं डॉ. रामेश्वर लाल खण्डेलवाल(भूमिका) भारतीय साहित्य भवन, 1948
2. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, नन्ददुलारे वाजपेयी, लोक भारती प्रकाशन, सं.2010, पृ. 100
3. वही, पृ. 102
4. वही, पृ. 102
5. आँसू, जयशंकर प्रसाद, साहित्य–सदन, चिरगाँव, झांसी।
6. वही, पृ.
7. लहर, जयशंकर प्रसाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. वही, पृ.
9. जयशंकर प्रसाद, नन्ददुलारे वाजपेयी, पृ. 60
10. कामायणी, जयशंकर प्रसाद, प्रखर प्रकाशन दिल्ली, भूमिका पृ. 6
11. कामायणी, जयशंकर प्रसाद, प्रखर प्रकाशन दिल्ली, पृ. 42
12. वही, पृ 42
13. वही, पृ. 43
14. वही, पृ. 83